Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.4152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 4 | December – 2016

''विष्णु प्रभाकर की कहानियों में सामाजिकता'

प्रा. माधव राजप्पा मुंडकर
नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस् एण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी।

प्रास्ताविक :-

संस्कृत साहित्य हिंदी कहानियों का आधार माना जाता है। संस्कृत साहित्य में कथा काव्य प्रकार था परंतु हिंदी साहित्य में आधुनिक काल की कहानी के रूप पर पाश्चात्य साहित्य पर प्रभाव है। हिंदी कहानियों में परिवर्तन करनेवाले प्रथम व्यक्ति प्रेमचंदजी ने सन् 1930-1936 ई. के बीच अपनी तीन कहानियाँ प्रसिद्ध की- 'पूस की रात', 'कफन', 'ठाकूर का कुआँ'। इन कहानियों की निरंतर चर्चा होती थी और होती रहेगी। प्रेमचंद के बाद अनेक कहानीकार हुए जिनमें विष्णु प्रभाकर जी का नाम सम्मान से लिया जाता है। उन्होंने चौथे दशक से सातवें दशक तक निरंतर कहानी रचना की, परंतु 'नई कहानी' अथवा 'समकालीन कहानी' में कहीं उन्हें स्थान प्राप्त नहीं मिला। फिर भी उनकी 'धरती अब भी घूम रही है' कहानी की खूब चर्चा रही।

विष्णू प्रभाकर जी का जन्म उत्तरप्रदेश के मुज्जफरनगर जिले के एक कस्बे मिरापुर में चीरांजीलाल के प्रतिष्ठित और संपन्न परिवार में 21 जून, 1912 ई. को हुआ। विष्णु प्रभाकर जी के पिताजी का नाम दुर्गाप्रसाद वैष्णव और माताजी का नाम महादेवी था। विष्णु प्रभाकर जी के कार्य देखकर कहा जाता है कि उनके विशाल हृदय में सभी के लिए प्रेम, करूणा, सहकार्य एवं स्नेहयुक्त अपनत्व पलता है। वे कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के स्वामी थे। विष्णु प्रभाकर जी का कोमल हृदय हमेशा मानवता के लिए समर्पित है। व्यक्तित्व की यही समस्त विशेषताएँ हमें साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। 'आवारा मसीहा' का लेखन कार्य उन्होंने चौदह वर्ष के अथक परिश्रम से संपन्न किया था जो कि साहित्य जगत को एक अविस्मरणीय घटना है। विष्णु प्रभाकर जी ने कहानी एवं उपन्यास विधा में उत्कृष्ट लेखन कार्य किया है। जिनमें 'अर्धनारीश्वर' उपन्यास को 'साहित्य अकादमी' का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। विष्णु प्रभाकर जी की पहली कहानी 'दिवाली के दिन' 'हिंदी मिलाप' पत्रिका में नवंबर, 1931 ई. में छपी थी जो फिलहाल अनुपलब्ध है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में तथा पश्चात् होनेवाले दंगे-फसाद, भ्रष्टाचार, नर-संहार आदि के परिणामों को विष्णु प्रभाकर जी ने स्वयं देखा और भोगा था। भ्रष्टाचार से समाज पर होने वाला असर उन्होंने अपनी अनेक कहानियों में चित्रित किया है। इन समस्याओं का निराकरण एक दो कहानियाँ लिखकर नहीं हो सका तो उन्होंने इन समस्याओं के विभिन्न पहलुओं से व्यक्त करनेवाली कई कहानियाँ उन्होंने लिखी। प्रस्तुत लेख के लिए निम्नलिखित कहानियों को आधार माना है।

1.'धरती अब भी घूम रही है' (1954 ई.) 2. 'ठेका'(1956 ई. 3. 'सुराज' (1947 ई.)।

इन कहानियों के माध्यम से देश में चल रहे अनेक प्रकार के भ्रष्टाचार का मार्मिक चित्रण किया है, 'धरती अब भी घूम रही है' विष्णु प्रभाकर जी की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। जिसमें अंत्यत कुशलता से बच्चों की मासूमियत के द्वारा समाज की भ्रष्ट व्यवस्था और देश में बिकती हुई न्याय-व्यवस्था पर करारा तमाचा जड़ दिया है। इस कहानी के पात्र बाल-बालिका कहानी के अंत तक पाठक के मन पर प्रभाव डाले रहते हैं। वे इस बात के लिए हमें प्रेरित करते हैं कि आप इस न्याय-व्यवस्था को परिवर्तित करें। ''इस कहानी में कोई घोषणा नहीं, न कोई प्रतिबद्धता। किंतु फिर भी यह एक जाने हुए सत्य को चौंकानेवाली कहानी है, इसलिए इस कहानी को सफलता मिल पाई है।'' 'धरती अब भी घूम रही है' इस कहानी में न्यायपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार और दो बच्चों की अपने पिता के प्रति प्रेम की भावना का चित्रण किया है। मध्यवर्गीय क्लर्क आर्थिक मजबूरी में इमानदार होते हुए भी छोटी रकम की रिश्वत लेने के कारण उसे जेल की सजा हो जाती है। रिश्वत तो सारे क्लर्क लेते हैं पर वे रिश्वत किस प्रकार लिया जाए इसकी जानकारी भी रखते है और पकड़े जाने पर अपने अधिकारी को रिश्वत देकर खुद को बचा भी लेते है, पर कोई ऐसा भी व्यक्ति होता है जे खुद को बचाने का तरिका नहीं जानता, इसलिए उसे सजा मिलती है। इस कहानी की मूल संवेदना यह है कि, जेल की सजा काट रहे क्लर्क के मातृहीन बच्चे, जिन्हें पढ़ाने की फीस चुकाने के लिए उसे रिश्वत ली होगी। वे बच्चे अपनी मौसी और रिश्वतखोर मौसा के यहाँ पल रहे हैं। उनका मौसा कई बार रिश्वत ले चुका था मगर उसे सजा न हुई। अपमान और क्रूरता भरे व्यवहार के चलते अपने पिता को सजा देनेवाले जज के घर बालक-बालिका जाकर उसे रिश्वत देकर अपने पिता को जेल से छोड़ देने की प्रार्थना करते हैं। वे बालक और बालिका नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। पर उन्होंने तो सुना है कि जज लोग रुपए, पैसे और लड़की की रिश्वत लेकर अपराधियों को छोड़ देते हैं। उन दो बच्चों ने किसी प्रकार बीस रुपए जमा किए और अपने बहन को समर्पित करने का प्रस्ताव लेकर न्यायाधिश के बंगले पर पहुँचे। उनके इस प्रस्ताव के साथ ही कहानी समाप्त हो जाती है।

'धरती अब भी घूम रही है' यह कहानी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को उघाड़ती है। उसी प्रकार 'ठेका' (1956 ई.) इस कहानी के ठेकेदार के माध्यम से समाज के दो वर्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार दिखाया है। इस कहानी का सारांश यह है कि, समाज में चल रहे अनेक दुराचारों का मूल

रिश्वतखोरी है। कुछ लोग अपनी स्वार्थ साधना में रिश्वत में पैसा नहीं बल्कि अपनी बीवी तक को दाँव पर लगा देने में पीछे नहीं हटतें और फिर उसे स्थिति को उसी रूप में स्वीकार करते है, जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के वक्त विष्णु प्रभाकर जी ने 'सुराज' (1947 ई.) कहानी लिखी इस कहानी में यह दिखाया गया है कि 'सुराज' कहानी का मुख्य पात्र भ्रम पले हुए है कि, आजादी मिलते ही आम आदमी की सारी समस्याओं का निराकरण हो जाएगा, रोगियों को दवा मिलने लगेगी पर दैनिक उपयोग की चीजें बाजार से गायब हो गई है और केवल चोर बाजार में ही उपलब्ध है-दियासलाई, चीनी, कपड़ा, पोस्टकार्ड आदि । वह कहता है, ''वैद्याजी कह रहे थे अच्छा-खाना, अच्छा पीना, अच्छा पहनना सबका इंतजाम राज करेगा। स्कूल खुलेगा, सड़कें बनेगी और सौ बात की एक बात जिंदगी का मजा अब आएगा न कोई भूखा रहेगा न नंगा। कोई किसी पर जुल्म सितम नहीं करेगा। गांधी बाबा खुद अपने मुँह से कह रहे थे। जेल से छुटे तब की बात है और यह सब उन्हीं का प्रताप है। पर वह अपनी पत्नी के लिए दवा लाने निकलता तो उसे दवा नहीं मिली हैं। क्योंकि सेठजी सारी दवाएँ ले गया है, सेठ के गोदाम में तेल, चीनी, चावल सब कुछ भरा हुआ था पर वह आम आदमी के लिए नहीं है, पर उस डॉक्टर के लिए जरूर है, जिसने सारी दवाएँ सेठ को दे दी गई और कथा के पात्र को एक भी कार्ड नहीं मिलता। इस प्रकार सेठ और सरकारी कर्मचारियों की मिलीभगत से चोरबाजारी और भ्रष्टाचार सामने आ जाता है। इस आम आदमी की स्थिति में आज भी कोई बदलाव नहीं होता आया।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त तीनों कहानियाँ भ्रष्टाचार, न्याय-व्यवस्था, चोरबाजारी पर लिखी हुई कहानियाँ हैं। 'धरती अब भी घूम रही है' कहानी का जज अगर भ्रष्टाचार में लिप्त है तो मध्यवर्गीय क्लर्क उससे दो कदम आगे ही रहेंगे यह स्थिति उस समय की एक सच्चाई को बहुत तीव्रता के साथ संकलित करती है। विष्णु प्रभाकरजी अन्य कहानियों के लिए नहीं लेकिन 'धरती अब भी घूम रही है' कहानी के कारण हमेशा के लिए हिंदी कहानी साहित्य में याद किए जाएंगे। उसी तरह 'ठेका' कहानी में जो अपनी पत्नी को पैसों के लिए दाँव पर लगा दिखाया गया है। यह भी तो एक भ्रष्टाचार का ही नमूना है। 'ठेका' कहानी से यह ज्ञात होता है कि लोग पैसों के लिए क्या कुछ नहीं करते हैं और 'सुराज' कहानी से यह प्रमाणित होता है कि निम्नवर्ग के लिए 'स्वराज' एक दु:स्वप्न से अधिक कुछ नहीं है। क्योंकि साहू जैसे लोग आजादी मिलने से पहले भी सुखी थे और बाद में भी सुखी है। क्योंकि पैसे के बल पर वे साधनों पर अपना अधिकार बनाए रहते हैं, जबकि झगडू मिश्र जैसे शोषित भले ही वे स्वतंत्रता सेनानी रहे हो जीवन के दु:ख-दर्द को सहने पर विवश हो जाते हैं क्योंकि उनका किसी साधन पर अधिकार नहीं है।

उपर्युक्त कहानियाँ विष्णु प्रभाकरजी ने स्वतंत्रता के बाद लिखी है। इन तीनों कहानियों में उन्होंने भारत में फैल रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने की कोशिश की है और उससे वे सफल भी हुए है। हाँ एक बात जरूर हैं कि तत्कालिक समस्या आज भी वैसी ही बनी है, समस्याएँ बढ़ रही है लेकिन समाधान नहीं मिल रहा है। विष्णु प्रभाकर जी के ये बहुचर्चित कहानियाँ आज भी प्रासंगिक लगती है। आज भी अनेक भ्रष्टाचार की वार्ताएँ मीडिया द्वारा दिखाई जाती हैं। चाहे आदर्श घोटाला, तेल मिलावट, अनाज मिलावट, शालेय पोषण आहार, टू-जी स्पेक्ट्रम आदि का उल्लेख किया जाता है। इस प्रकार का भ्रष्टाचार दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है, वह पहले जमाने से आज दस गुनाह बढ़ गया है। इससे हमें पता चलता है कि आज वातावरण भी सुरक्षित नहीं है जैसे गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर जिलाधिश को तेल माफियों ने जला दिया है। इसे हमें कहीं रोकना होगा तो कहीं जाकर भ्रष्टाचार की मात्रा यह कम होती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. विष्णु प्रभाकर व्यक्ति और साहित्य- संपा. महिप सिंह, अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.1983, पृ.सं.140.
2. 'धरती अब भी घूम रही है', विष्णु प्रभाकर-राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, सं.1956
3. 'पुल टुटने से पहले- विष्णु प्रभाकर-पराग प्रकाशन-नई दिल्ली, सं.1977
4. चर्चित कहानियाँ - विष्णु प्रभाकर- सामाजिक प्रकाशन-नई दिल्ली, सं.1993